6. राठौर, जे. एस. (1993) *मानव*, वर्ष 21, अंक-4, अक्टूबर 1993, पृ. 47.

7. सिन्हा, सुमनारानी (2007), *वृद्धजनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन*-इलाहाबाद के सेवानिवृत्त, वृद्धजनों की समस्या पर आधारित, पृ. 165.

8. वंदना रानी (1988), *वृद्धजन-समस्याएँ तथा प्रत्याशाएँ, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में*, जनपद बिजनौर का अध्ययन, पृ. 47.

9. प्रो. गुप्ता, एम.एल. एवं डॉ. शर्मा, डी.डी. (2003) *समाजशास्त्र*, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. 36.

10. डॉ. बघेल, डी.एस. (2007) *समाजशास्त्र*, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृ. 29.

मदरसों में महिला शिक्षक : चुनौतियाँ, अवसर और संभावना

जावेद अनीस
शोध अध्येता
समाजशास्त्र विभाग,
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश

शासकीय सहायता प्राप्त मदरसों में बड़ी संख्या में महिला शिक्षिकाऐं भी पढ़ाने का काम कर रही हैं, जो कि उनके लिये रोजगार के साथ-साथ घर से बाहर निकलने का एक अवसर भी है। प्रस्तुत शोध पत्र भोपाल स्थित मदरसों में पढ़ाने वाली शिक्षिकाओं के वैयक्तिक अध्ययन और इस विषय पर उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण एवं समीक्षा पर आधारित है। अध्ययन से संबंधित प्रमुख प्रश्न इस प्रकार से हैंः- मदरसें में पढ़ाने के बाद से शिक्षिकाऐं अपने आप में क्या परिवर्तन देखती हैं, क्या मदरसें में शिक्षण के बाद से शिक्षिकाओं के प्रति उनके परिवार/समाज के दृष्टिकोण में कुछ परिवर्तन आया है, वे अपने भविष्य को लेकर क्या सोचती हैं तथा अपने समाज में बच्चों की शिक्षा को लेकर क्या सोचती हैं। इस शोध पत्र के अंत में शोध से संबंधित कुछ प्रमुख निष्कर्षों को भी प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द- *मदरसा, मदरसों में शिक्षण व्यवस्था, मुस्लिम महिला और सशक्तीकरण*

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्

अध्ययन समस्या तथा अध्ययन क्षेत्र-

मदरसों में फील्ड वर्क के दौरान एक खास बात यह देखने में आयी कि मदरसों में शिक्षण कार्य ज्यादातर महिलाओं के द्वारा ही किया जाता है, इन शिक्षिकाओं में उत्साह और सीखने की ललक बहुत ज्यादा है। उनके बातचीत और व्यवहार में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने, स्वयं की शिक्षा को और आगे बढ़ाने, नये तकनीकी सीखने की चाह देखी गई। इन शिक्षिकाओं ने बातचीत के दौरान बहुत स्पष्ट तरीके से अपने समुदाय की दिक्कतों, उनमें वक्त के साथ आये बदलाव, समाज में लड़कियों और महिलाओं के लिये अवसरों की कमी, अपने और समुदाय के बेहतरी के लिये ''कुछ'' करने की चाह आदि जैसे विषयों पर अपने विचार अनौपचारिक बातचीत ओर चर्चाओं के दौरान रखें।

मदरसा शिक्षिकाओं के इन विचारों को देखते हुये शोधकर्ता द्वारा यह महसूस किया कि इन शिक्षिकाओं का एक पृथक गहन अध्ययन किया जाये इसके लिये 3 महिला शिक्षिकाओं का चयन किया गया तथा वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के आधार पर इनका अध्ययन किया गया और उसके विश्लेषण को इस शोध पत्र में प्रस्तुत किया गयाा है।

यह अध्ययन भोपाल शहर के इस्लामपुरा क्षेत्र में किया गया है। इस्लामपुरा क्षेत्र में ज्यादातर कुरैशी समुदाय के लोग रहते हैं। अध्ययन के लिये 3 महिला शिक्षिकाओं का चयन किया गया हैं जिनका विस्तार से वैयक्तिक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के लिये चयनित 3 मदरसा शिक्षिकाओं के साथ साक्षात्कार किया गया। प्रत्येक शिक्षिका से ओसतन दो बार बातचीत की गई है। अध्ययन के दौरान अध्ययनकर्ता के सामने अनेक चुनौतियाँ आयी। सबसे बड़ी चुनौती अध्ययनकर्ता के पुरुष होनें के कारण शिक्षिकाओं का संकोच था। इस शोध पत्र में शामिल शिक्षिकाओं के नाम परिवर्तित कर दिये गये हैं।

भारत में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा, सशक्तीकरण और परिवर्तन-

2011 की जनगणना के अनुसार[1] भारत में सबसे अधिक 42.72 प्रतिशत मुसलमान निरक्षर हैं जिनमें 48.1 प्रतिशत महिलायें और 37.59 प्रतिशत पुरुष शामिल हैं। इसी प्रकार से मुस्लिम समुदाय में ही सबसे कम 2.8 प्रतिशत लोग स्नातक हैं। मुस्लिम महिलाओं की स्थिति और खराब है केवल 0.81 प्रतिशत मुस्लिम महिलायें ही स्नातक हैं।

ऐतिहासिक रुप से देखें तो मध्यकालीन भारत में स्त्री शिक्षा के बारे में जानकारी अपर्याप्त है। रेखा कस्तवार (2006)[1] के अनुसार मध्यकाल में मुस्लिम स्त्रियों की शिक्षा की स्थिति अच्छी नहीं थी यद्यपि

सलतनत काल में कई मदरसे खोले गये लेकिन उनमें लड़कियों की शिक्षा की क्या स्थिति थी इसके संकेत नहीं मिलते हैं। उनकी शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य प्राय: कुरान पढ़ने तक सीमित था। मुगलकाल के बारे में बर्निअर लिखते हैं ''आम जनता की शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था।'' पुरुषों की शिक्षा के लिये साधन अपर्याप्त थे। सामान्य स्त्रियों की दशा उनसे निम्न तर थी। बाल विवाह के कारण स्त्रियों के पास शिक्षा के अवसर कम थे।

उपनिवेशक काल में भी लड़कियों के लिये अलग से उच्च स्तरीय मदरसे नहीं होते थे। लड़कियों के लिये अलग मदरसे की अवधारणा हाल ही की है। **मिनो, गेल** (2010)[2] के अनुसार 17वीं सदी, 18वीं सदी में ज्यादातर मुस्लिम लड़कियाँ घर के बाहर शिक्षा प्राप्त करने में भागीदारी नहीं बनती थी। कुलीन घरानों में उस्तानियाँ (शिक्षकायें) घर आकर लड़कियों को कुरान की शिक्षा देती थी। घर में लड़कियों को दूसरी चीजें पढ़ने के लिये बहुत कम समय मिलता था। ज्यादातर समय वो घर के काम ओर छोटे बच्चों के देखभाल में लगा देती थीं लेकिन कुछ अपवाद भी थे जैसे भोपाल की बेगमें सिकंदर बेगम (1819–68), शाहजहाँ बेगम (1838–1901) और सुल्तानजहाँ बेगम (1858–1930) तीनों पीढ़ियों की बेगमें शिक्षित थीं और वे अपने राज्य तथा अन्य जगहों पर लड़कियों की शिक्षा की बड़ी संरक्षिकाएँ बनी। मुस्लिम महिलाओं की घरेलू तालीम कभी भी व्यापक नहीं थी। 1845 की एक सरकारी रिपोर्ट में उत्तर भारत में लड़कियों के स्कूलों के संदर्भ में बताया गया था कि दिल्ली में 6 ऐसे स्कूल थे जिसमें 46 लड़कियाँ पढ़ती थीं जो कि ऊँचे खानदान व धनी परिवारों की लड़कियाँ थी।

वर्तमान में देश के विभिन्न हिस्सों में लड़कियों के मदरसे काफी संख्या में हैं जो मुस्लिम लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में लड़कियों के मदरसों की संख्या में वृद्धि का मुख्य कारण दो है-प्रथम कारण है कि मुस्लिम समाज में लड़कियों की शिक्षा के महत्व के प्रति जागरुकता का बढ़ना जबकि दूसरा कारण है कि मुख्य धारा के स्कूलों में लड़के-लड़कियाँ एक साथ पढ़ते हैं। इस कारण अलग से लड़कियों के मदरसों की जरुरत महसूस की गई।

हालांकि कई विद्वान इसे भी अपर्याप्त माने हैं। **जोया हसन एवं रितु मेनन** (2005)[3] के अनुसार ''मुस्लिम लड़कियों में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिये अल्पसंख्यक संस्थाओं और मदरसों को बढ़ावा देना केवल आशिक समाधान होगा, सरकारी स्कूलों की उपलब्धता ओर उन तक पहुँच से ही व्यापक स्तर पर परिवर्तन संभव है।''

असगर अली इंजीनियर (2001)[4] के अनुसार भारत में भी आजादी के बाद मुसलमानों ने अपनी प्रगति के लिये कोई ठोस रणनीति नहीं बनाई उनके नेता धार्मिक मसलों में ही उलझे रहे और उन्होंने मुसलमानों

के आर्थिक व शैक्षणिक उन्नति के लिये पर्याप्त प्रयास नहीं किये। भारतीय मुसलमानों को अब यह समझ में आ रहा है कि अपनी अलग पहचान रखते हुये उन्हें स्वतंत्र धर्म निरपेक्ष में अपना स्थान बनाने के लिये प्रयास करने होंगे। हालांकि आज भी जोर मदरसे स्थापित करने पर ही है परन्तु अब मुसलमान धर्मनिरपेक्ष शैक्षणिक संस्थानों के स्थापना भी कर रहे हैं, समुदाय में नये माध्यम वर्ग का उदय हो रहा है जो आधुनिक और स्त्री शिक्षा का हिमायती है।

विभिन्न अध्ययन बताते हैं कि शिक्षा का महिलाओं के सशक्तीकरण में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। **माहौर एवं बड़ोले** (2014)[5] **द्वारा** इंदौर शहर की कामकाजी महिलाओं को लेकर किये गये अध्ययन के निष्कर्षो के अनुसार अधिकतर निजी शैक्षणिक संस्थाओं में काम करने वाली इन महिलाओं ने पुरानी रुढ़िवादी परम्पराओं को पीछे छोड़कर सभी प्रकार के कार्यों को अपनी जीविका का साधन बना लिया है जिससे वे अपना भविष्य उज्जवल करने में सक्षम सिद्ध हुई है।

इसी प्रकार से डॉ नुजहत जमां द्वारा मध्यप्रदेश के चार बड़े शहरों भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर ओर सागर में किये गये अध्ययन के अनुसार[2] 20 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं को शिक्षण का काम पसंद हैं, इसका एक प्रमुख कारण यह है कि बाहर नौकरी के नाम पर ज्यादातर परिवार महिलाओं के लिये टीचिंग को ही सुरक्षित मानते हैं। अध्ययन के निष्कर्षो के अनुसार नौकरी करने से महिलाओं की सोच में काफी बदलाव आया है। परिवारों के असहयोग के बावजूद 30 प्रतिशत महिलायें परिवार से जुड़े अहम फैसले खुद ले रही हैं। इसी प्रकार से नौकरी करने के कारण इन महिलाओं के खरीददारी के लिये बाहर जाना भी अब पहले की तुलना में आसान हुआ है।

लड़कियों के लिये चलने वाली ज्यादातर मदरसों का संचालन महिलाओं द्वारा किया जाता है। कई विचारकों का मानना है कि यह मुस्लिम महिलाओं और लड़कियों को बदलाव को बाहर निकलने का मौका दे रहे हैं इसी बदलाव के कारण उन्हें बाहर निकलने का मौका और रोजगार का साधन मिल रहा है। मदरसों में लोग अपनी बच्चियों को आसानी से भेज देते हैं, भारत सरकार द्वारा मदरसा आधुनिकीकरण कार्यक्रम चलाये जाने के कारण यहाँ उन्हें दीनी शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा ग्रहण करने का मौका भी मिलता है। यहाँ पढ़ाने वाली अध्यापक महिलायें होती हैं इसलिये यह इन महिलाओं के लिये लड़कियों में शिक्षा में मदद करने के साथ-साथ रोजगार के साधन भी हैं।

वैयक्तिक अध्ययन-1

अस्माँ - मदरसा शिक्षिका

परिचय -

23 साल की अस्माँ मदरसा इस्लाहुल कुरैश में कक्षा 4 से 8 तक अंग्रेजी पढ़ाती हैं। इस मदरसें में उन्हें शिक्षिका का काम करते हुये 4 साल हो गये हैं। शुरुआत में उन्हें 900 रुपये प्रतिमाह सेलरी मिलती थी। वर्तमान में 1700 रुपये प्रति माह वेतन प्राप्त होता है। इनके पिताजी गोश्त की दुकान में काम करते हैं। माँ घर में सिलाई का कार्य कराती हैं जिससे थोड़ी बहुत आमदनी हो जाती है। अस्माँ के 2 छोटे भाई बहन हैं। अस्माँ ने 12वीं तक अपनी शिक्षा पूरी की हैं।

वो कौन से कारण है जिनकी वजह से आप मदरसें में पढ़ाने आयी -

अस्माँ का कहना था कि घर की आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के कारण वह कॉलेज नहीं कर पायी। इसलिये वह चाहती थी कि मदरसें में नौकरी कर कालेज लायक फीस इकट्ठी कर ले और आगे की पढ़ायी करें। दूसरी तरफ नौकरी करने से घर में आर्थिक मदद भी हो जायेगी, अपनी बहन की पढ़ाई में मदद कर सकेगी। और उसके शौक पूरे कर सकेंगी। साथ ही साथ उन्हें ये भी लगता था कि वह अपनी पढ़ाई का उपयोग अच्छे कामों में करें।

मदरसें में आने के बाद आप अपने आप में क्या परिवर्तन देखती हैं-

अस्माँ ने बताया कि मदरसा में आने के बाद उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है पर उन्हें लगता है कि अगर वो और ज्यादा पढ़ी होती तो उनका आत्मविश्वास अधिक होता। पापा उसे कहीं भी परिवार के सदस्यों के अलावा, अकेले, किसी दूसरे के साथ बाहर जाने की इजाजत नहीं देते हैं। अगर कभी पास के दुकान तक भी अकेली चली जाती थी तो रिश्तेदार/पड़ोसी घर में आकर शिकायत करते थे।

मदरसें में आने के बाद आप अपने काम में क्या परिवर्तन देखती है-

अस्माँ ने बताया कि मदरसें में पढ़ाने के दौरान मदरसा प्रबंधन को सीखा हैं। साथ ही पढ़ाने का अनुभव भी प्राप्त हुआ है। अब अगर वह अन्य किसी और स्कूल में नौकरी के लिये जायेगी तो इस अनुभव का फायदा मिलेगा। साथ ही उन्होंने मदरसा में बच्चों को पढ़ाने के लिये नये-नये तरीके खोजे हैं जिससे बच्चे आसानी से अंग्रेजी सीख सकते हैं। यह उनके लिये एक बड़ी उपलब्धि हैं।

क्या मदरसें में आने के बाद आपके प्रति घरवालों/समाज के नजरिया में कुछ परिवर्तन आया हैं-

अस्माँ ने बताया कि जब से वह मदरसें में पढ़ा रही है पापा का नजरिया उसके प्रति सकारात्मक हुआ है। उन्होंने बताया कि उनको पढ़ाई छोड़े 4 साल से ज्यादा हो गये पर अब पिताजी आगे की पढ़ाई

करने को कहते हैं क्योंकि उनकी चचेरी बहनें पढ़ायी कर रही हैं साथ ही कुछ की अच्छी जगह नौकरी लग गयी है और उनकी अच्छे घर में शादी हो गई है। उनको देख कर पिताजी सोचते हैं कि अगर अस्माँ भी ज्यादा पढ़ लेती हैं तो उनकी भी शादी अच्छी जगह हो जायेगी। अस्माँ ने बताया कि इस साल वे अपनी पढ़ाई फिर से शुरु करेगी और वहबी.ए. की प्रायवेट परीक्षा देने का सोच रही हैं।

आप अपने भविष्य को लेकर क्या सोचती हैं-

अस्माँ से कहा कि वह आत्म निर्भर होना चाहती हैं अभी जो सेलरी मिलती है वह बहुत ही कम है। वह अन्य किसी ओर जगह नौकरी करना चाहती हैं जहाँ उसको सैलरी तो ज्यादा मिले ही साथ ही साथ नयी नयी बातें भी सीखने को मिले। अगर उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी तो वह अपनी बहन को भी आगे पढ़ने में मदद करेगी। जब उनसे यह पूछा गया कि आत्मनिर्भरता के मायने उनके लिये क्या है तो उन्होंने कहा कि जो अपनी और अपने घरवालों की जरूरतों को पूरा कर सकें वही उनकी नजर में आत्मनिर्भर हैं।

आप अपने सोसायटी के बच्चों के भविष्य को लेकर क्या सोचती हैं-

अस्माँ ने जोर देकर यह बात कही कि सबसे पहले तो परिवार की सोच में परिवर्तन लाने की जरुरत हैं। अगर घरवाले चाहे तो लड़की के विकास को कोई रोक नहीं सकता। इसका उदाहरण देते हुये उन्होंने बताया कि उसके बड़े पापा ने समाज की परवाह किये बिना अपनी लड़की को एम.बी.ए. कराया ओर जो आज मल्टीनेशनल कम्पनी में काम करती हैं ओर वो बुरका नहीं पहनती है।

उन्होंने कहा कि परिवार के बाद समाज की भूमिका है। परन्तु समाज के लोगों को शिक्षा से कोई मतलब नहीं है, वे तो अपने बच्चों के लिये बस इतना ही सोचते हैं कि लड़कियाँ इस्लामिक पढ़ायी कर ले और लड़के बचपन से ही काम करने लगे।

वैयक्तिक अध्ययन-2

निकहत-मदरसा शिक्षिका

परिचय -

निकहत की उम्र 35 वर्ष की है। मदरसे में पढ़ाते हुये उन्हें 13 साल हो गये है। इन्होंने शादी के बाद इस मदरसे में नौकरी शुरू की। निकहत के पापा सरकारी नौकरी में थे। वह अपने बच्चों के पढ़ाई को लेकर बहुत जागरूक थे। निकहत के सभी भाई बहनों ने उच्च शिक्षा ग्रहण की है। दोनों भाई सरकारी

नौकरी करते हैं। बहनों ने भी बी.ए. तक की पढ़ायी की थी। जबकि निकहत ने अपनी 8वीं तक की पढ़ाई सरकारी स्कूल में तथा होम साइंस विषय से 11वीं कक्षा तक की शिक्षा मदरसा से प्रायवेट की थी। वह आगे की शिक्षा जारी नहीं रख पायी क्योंकि उन्हें माइग्रेन की समस्या है।

निकहत की शादी 16 साल की उम्र में ही हो गई थी। उनके तीन बच्चे हैं, निकहत ने बताया कि वो अपने बच्चों को पढ़ा रही है। उनका बेटा कॉलेज तथा छोटी बेटी कान्वेन्ट स्कूल में कक्षा 7 के विद्यार्थी है।

वो कौन से कारण है जिनकी वजह से आप मदरसें में पढ़ाने आयी-

निकहत के पति भोपाल गैस काण्ड के बाद से लगातार बीमार रहने लगे थे। वे कारपेन्टरी का काम भी नहीं कर पा रहे थे इसके चलते घर की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। तब नजमा ने मदरसें में अपनी समस्या बतायी और मदरसों में शिक्षिका की नौकरी में रखने की दरखास्त की। तब से आज तक इस मदरसे में पढ़ा रही हैं। उन्होंने कहा कि वे शादी के बाद से ही मदरसा में पढ़ाना चाहती थी, परन्तु पति ओर सास ने इसकी इजाजत नहीं दी बाद में जब घर में आर्थिक समस्या आयी तो दोनों ने अनिच्छा से मदरसा में पढ़ानें की इजाजत दी।

निकहत ने बताया कि मदरसा में पढ़ाने का मुख्य कारण आर्थिक तो था लेकिन यह उनके लिये मानसिक सुकून का एक जरिया बन गया।

मदरसे में आने के बाद आप अपने आप में क्या परिवर्तन देखती हैं-

मदरसे में पढ़ाने के बाद से निकहत का आत्मविश्वास बढ़ा है। निकहत अब कई सारे बाहर के काम स्वयं ही करने लगी हैं। अब वह अपने बच्चों के स्कूल में जाती हैं। पेरेन्ट टीचर बैठक में हिस्सा लेती हैं। अब वह लोगों के साथ आत्मविश्वास के साथ बता कर लेती हैं। मदरसें में पढ़ाने की वजह से उन्हें अंदर से खुशी का एहसास भी हो रहा है कि वह किसी के काम आ रही है।

मदरसें में आने के बाद आप अपने काम में क्या परिवर्तन देखती है-

उन्होंने कहा कि जब वो मदरसे में पढ़ाने आयी थी तब अच्छे से पढ़ा नहीं पाती थी, पर धीरे धीरे इतना आत्मविश्वास आ गया है कि अब वे अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाली अपनी बच्ची को स्वयं पढ़ाती हैं। उन्होंने कहा कि पहले वो कभी भी घर से अकेले नहीं निकलती थी पर अब वो अकेले जा कर घर के कई काम करती हैं।

क्या मदरसे में आने के बाद आपके प्रति परिवार/समाज के नजरिया में कुछ परिवर्तन आया हैं-

निकहत ने जब मदरसा में नौकरी करना शुरु किया तो यह उनके पति को पसंद नहीं आया था परन्तु घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण अनिच्छा से उन्होंने नौकरी की इजाजत दी थी लेकिन आज जब घर की आर्थिक स्थिति थोड़ी सुधर गई है तो उनके पति का कहना है कि इस नौकरी के कारण तुम्हारे अंदर बहुत आत्मश्विास आया हैं।

आप अपने भविष्य को लेकर क्या सोचती है-

निकहत ने कहा कि बच्चों के माँ-बाप शिक्षा को लेकर जागरुक नहीं हैं। वे बच्चों को मदरसा भेज देते हैं फिर उसके बाद उनकी पढ़ाई पर कोई ध्यान नहीं देते हैं। ये भी नहीं देखते है कि वो क्या पढ़ रहे हैं, होम वर्क करते हैं या नहीं। बच्चों के परिवार के लोगों की शिक्षा के प्रति जागरूक होना बहुत जरुरी है।

वैयक्तिक अध्ययन-3

ताहिरा-मदरसा शिक्षिका

परिचय -

22 साल की ताहिरा मदरसे में 2 साल से पढ़ा रही हैं। जहाँ कक्षा 1 से 8 वीं तक शिक्षा दी जाती है। उन्होंने 10वीं तक की तालीम हासिल की है। उसके आगे शिक्षा जारी नहीं रख पाने का कारण यह था कि जिन लड़कियों के साथ मिलकर वो स्कूल जाती थी उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया और वो अकेले स्कूल नहीं जा सकती थी। ताहिरा के पिताजी शिक्षा के प्रति जागरुक थे, वे हमेशा अपनी लड़कियों को पढ़ने के लिये प्रेरित करते थे।

वो कौन से कारण है, जिनकी वजह से आप मदरसों में पढ़ाने आयी-

ताहिरा ने बताया कि यह मदरसा उनकी बुआ का है। दसवीं की पढ़ायी पूरी करने के बाद बुआ ने कहा कि मदरसे में शिक्षिका की जरूरत है। इसलिये वह इस मदरसे में शौकिया तौर पर कुछ समय के लिये पढ़ा रही है। अगले साल उनकी शादी होने वाली है। जब उनसे पूछा गया कि शादी के बाद क्या वो मदरसे में नौकरी जारी रखेगी तो उन्होंने कहा कि अगर उनके पति मना करेगें तो वो आगे काम नहीं करेगी।

मदरसें में आने के बाद आप अपने आप में क्या परिवर्तन देखती हैं-

उन्होंने कहा कि मदरसा में आने के बाद भी वो अपने में ज्यादा परिवर्तन नहीं देखती हैं। उसमें आज भी घर से बाहर अकेले कहीं जाने की हिम्मत नहीं है। अकेले जाने के नाम से ही घबराहट होने लगती है। जब उनसे पूछा गया कि वो अकेले निकलने से घबराती क्यों हैं तो ताहिरा ने बताया कि उनके घर वालों ने बचपन से ही कभी उन्हें कहीं अकेले जाने नहीं दिया है। वो स्कूल भी सहेलियों के साथ जाती थी, जब सहेलियों ने स्कूल जाना बंद किया तो उनका भी स्कूल जाना बंद हो गया। उन्हें जब भी कहीं बाहर जाना होता है तो वह अपने माँ या भाई के साथ ही जाती है।

मदरसे में आने के बाद आप अपने काम में क्या परिवर्तन देखती हैं-

ताहिरा ने कहा कि पहले वो शौकिया तौर पर यहाँ पढ़ाने आयी थी परन्तु जब वो बच्चों को पढ़ाने लगीं तो उन्हें भी मजा आने लगा और अब लगता है कि जो उन्होंने सीखा है वो बच्चों को भी सिखाना चाहिये।

क्या मदरसे में आने के बाद आपके प्रति परिवार/समाज के नजरिया में कुछ परिवर्तन आया हैं-

ताहिरा ने कहा कि उन्हें ऐसा कुछ महसूस नहीं हुआ, वो घर से मदरसा और मदरसे से घर जाती हैं। इसके अलावा कहीं नहीं जाती हैं। मदरसे आने से पहले और मदरसे से जाने के बाद घर के काम में माँ का हाथ बंटाती हैं।

आप अपने भविष्य को लेकर क्या सोचती हैं-

ताहिरा ने कहा कि अगर उन्हें मौका मिलेगा तो वो नौकरी करना चाहेगी परन्तु केवल शिक्षिका की ही, क्योंकि उन्हें लगता है कि वो बच्चों को अच्छे तरीके से पढ़ा सकती हैं ओर इस काम में उन्हें मजा भी आता है। उन्होंने कहा कि वह आगे बढ़ना चाहती हैं ताकि वह अपनी आने वाली नस्ल को पढ़ा सकें और अगर कभी जिदंगी में बुरा वक्त आये तो परिवार की आर्थिक मदद कर सकें।

आप अपने सोसायटी के बच्चों के भविष्य को लेकर क्या सोचती हैं-

ताहिरा ने कहा कि परिवार वालों को चाहिये कि लड़कियों को खूब पढ़ायें। उन्हें हर काम करने देना चाहिये। उन्होंने कहा कि बच्चे तो वो कच्ची मिट्टी होते हैं जिसे परिवार वाले जैसा चाहे गढ़ सकते हैं। उन्होंने अपना उदाहरण देते हुये कहा कि उनके घर वालों ने उसे कभी भी अकेले कहीं जाने नहीं दिया। अगर उसके घर में भी ये माहौल मिला होता तो वह भी अपनी पढ़ाई पूरी कर पाती।

निष्कर्ष-

अध्ययन के दौरान यह साफ तौर पर निकल कर आया कि मदरसे में पढ़ाने के कारण औरतों को बाहर निकलने का एक मौका मिला है और वे इस मोके को लेकर काफी उत्साहित हैं। इससे वे खुद में काफी बदलाव महसूस कर रही है और उन्होंने अपनी उपयोगिता और महत्व का एहसास हुआ है। यह बदलाव उनके आत्म विश्वास बढ़ने, बाहरी लोगों से बातचीत करने, सोच में व्यापकता आने आदि में देखा जा सकता है। अब वे अपने आप को ज्यादा आत्मनिर्भर और महत्वपूर्ण महसूस करती हैं, बाहरी लोगों से आत्मविश्वास के साथ बात कर सकती हैं और घर से बाहर के काम (जैसे राशन लाना, बिजली बिल भरना इत्यादि) स्वयं कर लेती है।

दूसरी एक बात जो निकल कर आती है कि वे शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण मानती और समझती है तथा अपने समुदाय के तालीमी पिछड़ेपन को समुदाय की तरक्की में रुकावट मानती हैं। अपने समुदाय की तालीमी तरक्की में भी खुद की भूमिका देखती हैं। इसलिये वे अपने समुदाय के तालीमी तरक्की में अपना योगदान देना चाहती है एक तरफ वे खुद अपने आगे की छूटी हुई पढ़ाई पूरा करना चाहती हैं वही दूसरी तरफ वे अपने समुदाय के बच्चों के तालिमी तरक्की में अपनी भूमिका निभाना चाहती हैं। उनमें खुद और अपने समुदाय को आगे बढ़ने और बढ़ाने की बड़ी ख्वाहिश है और उन्हें लगता है कि इसी से उनके और उनके समुदाय की तरक्की हो सकती है।

मदरसा शिक्षिकाओं को लगता है कि मदरसे में पढ़ाने के बाद से उनके परिवार और समाज के नजरिये में उनके प्रति सकारात्मक बदलाव आया है, शुरुआत में घरवालों, रिश्तेदारों द्वारा उन्हें मदरसे में पढ़ाने से रोका गया या मुश्किल से इजाजत दी गयी। लेकिन धीरे-धीरे इसमें बदलाव आना शुरु हुआ और अब इन लोगों का मानना है कि वे मदरसा में पढ़ा कर अच्छा काम कर रही है। शिक्षिकाओं को लगता है कि इससे उनकी परिवार और समाज में इज्जत बढ़ी है। रिश्तेदार और आस-पड़ोस के लोग उन्हें समान देते हैं, उनसे सलाह लेने आते हैं।

मदरसे में पढ़ाने और बाहर निकलने की वजह से उनके सपने भी बने और बढ़े हैं अपने परिवार में वे और ज्यादा जिम्मेदारियाँ निभाना चाहती हैं। इसके लिये वे आर्थिक तौर पर और आत्मनिर्भर होना चाहती है, जिससे अपने परिवार को अधिक मदद कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. कस्तवार, रेखा (2006) : *स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. मिनो, गेल (2010) : *शिक्षित मुसलमान औरतें : वास्तविकता और आदर्श*, जेंडर और शिक्षा रीडर, भाग-1 निरंतर प्रकाशन, नई दिल्ली.

3. Hasan, Zoya & Menon, Ritu (2005): *Educating Muslim Girls: A Comparison of Five Indian Cities*, Kalsi for Women, New Delhi.
4. इंजीनियर, असगर अली (2001) : *इस्लाम वुमेन एंड जैंडर जस्टिस*, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
5. माहौर, सुशीला, बड़ोले सपना (2014) : विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं की आधुनिकता का समाजशास्त्रीय अध्ययन (इंदौर शहर के विशेष संदर्भ में), अक्टूबर 2014, अंक 2, *शब्द ब्रह्मादृशोध पत्रिका*, इंदौर.
6. सच्चर समिति रिपोर्ट, (2006) : *भारत में मुसलमानों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति*, केन्द्रीय सचिवालय, भारत सरकार.
7. जयरथ, सुषमा : *दिल्ली में लड़कियों के स्वत मदरसों का जैंडर परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत एक शोध अध्ययन*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्.